कथा सरिता

ऐसे बने गांधीजी आजन्म सत्यव्रती

महात्मा गांधी ने जब बचपन में 'सत्य हरिश्चंद्र' और 'श्रवण कुमार' नाम के दो नाटक देखे तो वे उनके संदेश से बहुत प्रभावित हुए। 'सत्य हरिश्चंद्र' देखकर गांधीजी ने आजीवन सत्य बोलने और 'श्रवण कुमार' देखकर मातृ-भक्ति का प्रण लिया। एक बार उनके विद्यालय में सभी बच्चों के लिए 'खेलकूद' विषय अनिवार्य कर दिया गया। खेलकूद के लिए जल्दी विद्यालय पहुंचना होता था। हालांकि गांधीजी की रुचि ख-लकूद में नहीं थी। फिर भी वे प्रतिदिन इस नियम का पालन करते थे। एक दिन वे अपने पिता के खराब स्वास्थ्य के चलते उनकी सेवा में लगे हुए थे। आसमान में बादल छाए होने के कारण उन्हें समय का पता नहीं चला। जब विद्यालय पहुंचे तो खेलकूद का समय समाप्त हो चुका था और सभी बच्चे मैदान से जा चुके थे। अगले दिन प्रधानाध्यापक ने उनसे खेल में न आने का कारण पूछा तो वे बोले, 'मैं तो आया था, किंतु वहां कोई नहीं था।' 'प्रधानाध्यापक ने विलंब का कारण पूछा तो उन्होंने कहा, 'मेरे पास घड़ी नहीं थी। आसमान में बादल होने के कारण मुझे समय का पता नहीं चला।' किंतु प्रधानाध्यापक ने समझा कि गांधीजी झूठ बोल रहे हैं। उन्होंने गांधीजी पर दो आने का जुर्माना लगा दिया। गांधीजी स्वयं को झूठा समझे जाने के दु:ख में रो पड़े। बहुत कहने पर भी प्रधानाध्यापक ने गांधीजी की बात पर यकीन नहीं किया। तब गांधीजी ने अपने मन में निश्चय किया कि वे जीवन में कभी असत्य नहीं बोलेंगे और अपने भीतर ऐसा आत्मबल पैदा करेंगे कि लोग भी उसे सत्य ही मानें। दृढ़व्रती होकर सत्य को अपने संपूर्ण आचरण में उतारने वाले का नैतिक पक्ष इतना मजबूत हो जाता है कि शेष समाज उसे सही मानकर उसके सम्मान में स्वत: ही झुक जाता है।

अज्ञान मिटाने का संकल्प ही गुरुदक्षिणा

स्वामी दयानंद सरस्वती बाल ब्रह्मचारी थे। बचपन में उन्होंने मथुरा में दंडी स्वामी विरजानंदजी से तीन वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की। स्वामी वि-रजानंदजी ने दयानंद की अद्‌भुत प्रतिभा को पहचान लिया था, इसलिए वे उन्हें बहुत स्नेह करते थे और उन्हें अधिकाधिक ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करते थे। उनकी सभी बौद्धिक जिज्ञासाओं का विरजानंदजी उचित तरीके से समाधान करते थे। जब दयानंद का अध्ययन काल समाप्त हुआ तो उन्हें विरजानंदजी को गुरु दक्षिणा देने का विचार आया। उनके पास कुछ था तो नहीं। अत: वे कुछ लौंग लेकर स्वामी विरजानंद के पास आए और बोले, 'गुरुवर! मेरे पास और तो कुछ नहीं है, जो आपको अर्पित करूं। चूंकि आपको लौंग बहुत पसंद है, इसलिए ये आधा सेर लौंग कहीं से मांगकर लाया हूँ। कृपा कर इन्हें ग्रहण कीजिए।' स्वामीजी ने एक लौंग हाथ में उठाकर कहा, 'लौंग तो बाज़ार में कहीं भी मिल जाएंगे दयानंद! मैं तुमसे वह चीज़ चाहता हूँ, जो तुम्हारे सिवाय किसी के पास नहीं है।' दयानंद ने विनम्रतापूर्वक उस वस्तु के विषय में पूछा तो स्वामीजी बोले, 'दयानंद! मैंने तुम्हारे हृदय में एक ज्वाला के दर्शन किए हैं और उस ज्वाला को अपनी ओर से दिशा देने का प्रयास किया है। वह है ज्ञान की ज्वाला। तुम इस ज्वाला से अवैदिक मत-मतांतरों के अंधकार को मिटाओ और वैदिक धर्म का प्रसार करो। बस मुझे यही गुरुदक्षिणा चाहिए।' दयानंद ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की और आजीवन वैदिक धर्म के प्रसार में लगे रहे। सच्चे गुरु स्वयं द्वारा प्रदत्त ज्ञान का विस्तार शिष्य में देखना चाहते हैं। वस्तुत: उनकी शिक्षा को आचरण में उतारकर समाज को ज्ञान के आलोक से भर देने वाले शिष्य का यही काम उनके लिए सच्ची गुरु दक्षिणा होती है।

सूचना – सभी पाठकों को सूचित किया जाता है कि 1 जून, 2014 से ओम शान्ति मीडिया के सदस्यता शुल्क में मामूली परिवर्तन किया जा रहा है। 1 वर्ष के लिए ₹190, 3 वर्ष के ₹570 और आजीवन ₹4500 का शुल्क लिया जाएगा।

भगतसिंह की चतुराई से बनी बात

स्वाधीनता के पहले लाहौर की एक बात है। एक दिन भगतसिंह, विजयकुमार सिन्हा और भगवान दास माहौर एक सभा से लौट रहे थे। रास्ते में किसी सिनेमा हॉल में हब्शी गुलामों पर होने वाले अत्याचारों पर लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तक 'अंकल टॉम्स केबिन' पर आधारित फिल्म का पोस्टर दिखाई दिया। भगतसिंह बोले, 'यह फिल्म ज़रूर देखनी चाहिए।' समस्या पैसे की थी। क्रांतिकारियों के नेता चंद्रशेखर आजाद सभी को खाने के लिए चार आने रोज़ देते थे। उन दिनों दो आने में एक समय का भोजन मिल जाता था।

भगवान दास माहौर के पास दो दिन के भोजन के एक रुपए आठ आने (तीनों के लिए) थे और सिनेमा के तीन टिकट बारह आने में मिल सकते थे। किंतु फिर तीनों के एक दिन के भोजन का प्रबंध कैसे होता? माहौरजी ने पैसे देने से इनकार कर दिया, किंतु भगतसिंह के प्रबल आग्रह के समक्ष उन्हें झुकना पड़ा। भारी भीड़ में जद्दोजहद कर भगतसिंह तीन टिकट ला पाए, किंतु चवन्नी के टिकट खत्म हो जाने के कारण वे अठन्नी के टिकट ले आए। अब सारे पैसे समाप्त हो चुके थे और दो दिन भूखे रहने की समस्या थी। फिल्म देखकर तीनों निकले तो भूख से आंतें कुलबुला रही थीं। किंतु कोई किसी से कुछ नहीं बोला। अलबत्ता भगतसिंह ने आजाद के सामने जाकर बिना कोई भूमिका बांधे फिल्म की कहानी अत्यंत मार्मिक व प्रभावशाली तरीके से उन्हें सुनाई और अंत में कहा, 'इस फिल्म को हर क्रांतिकारी को देखना चाहिए। इसलिए हम भी देखकर ही आ रहे हैं।' आजाद हंस दिए और बिना नाराज़ हुए खाने के पैसे दोबारा दिए। वाक चातुर्य से विपरीत परिस्थितियों को अपने पक्ष में किया जा सकता है। अत: जब भी बोलें, तौलकर बोलें।

प्रेम लाता है दिलों को नज़दीक

एक संत अपने शिष्यों के साथ काशी में गंगा घाट पर नहाने गए। वहां कुछ लोग एक-दूसरे पर जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। संत मुस्कराए और उन्होंने शिष्यों से पूछा 'एक-दूसरे पर गुस्सा होने वाले लोग चिल्लाते क्यों हैं? एक शिष्य ने कहा, 'क्योंकि हम शांति खो देते हैं इसलिए चिल्लाने लगते हैं।' संत ने पूछा, 'किंतु एक-दूसरे के समीप होने पर भी चिल्लाने की क्या ज़रूरत है? आप जो भी कहना चाहें बहुत कोमलता से कह सकते हैं।' किसी शिष्य के पास इसका जवाब नहीं था। तब संत ने समझाया, 'जब दो लोग एक-दूसरे से नाराज़ होते हैं तो उनके दिलों के बीच दूरी बढ़ जाती है। अब इस दूरी को तय करने के लिए उन्हें चिल्लाना पड़ता है ताकि अपनी बात एक-दूसरे तक पहुंचाई जा सके। जितना ज़्यादा गुस्सा होंगे, उतना ही फासला बढ़ेगा और उतनी ऊंची आवाज़ में चिल्लाना पड़ेगा। बात इतनी सी है।' फिर उन्होंने मुस्कराकर पूछा, ' जब दो लोग एक-दूसरे के प्रेम में होते हैं तो क्या होता है? वे बहुत धीमे-धीमे, कोमलता के साथ आपस में बातें करते हैं। इसकी वजह यह है कि उनके दिल एक-दूसरे के बहुत नज़दीक होते हैं। ऐसे में दोनों के बीच दूरी कम हो जाती है। इतना छोटा फासला तय करने के लिए बहुत ऊंची आवाज़ की ज़रूरत नहीं होती।' फिर उन्होंने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, 'जब दो लोगों के बीच स्नेह बढ़ता है,मोहब्बत बढ़ती है और उनके बीच रिश्ता और मजबूत होता है तो उनके दिल इतने करीब आ जाते हैं कि वे फुसफुसाकर बातें करने लगते हैं। अंत में प्रेम इतनी गहराई प्राप्त कर लेता है कि एक-दूसरे की ओर डाली गई एक नज़र ही बात पहुंचाने के लिए काफी होती है।' बात सिर्फ स्त्री-पुरुष के प्रेम की नहीं है, प्रेम हर रूप में ही दिलों के बीच फासले कम करता है।

सिरसा। कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं कुलदीप जैन,डिस्ट्रीक्ट एण्ड सेशन्स जज, ब्र.कु. सतीश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बाबा राम,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बिन्दू तथा ब्र.कु. वीनू।

अलकापुरी-बड़ौदा। महाशिवरात्रि महोत्सव तथा ईश्वर अनुभूति मेले के समाप्ति समारोह में दीप प्रज्वलन करते हुए धारासभ्य एवं पूर्व मंत्री जितेन्द्र सुखाडीया, लाइफ साइंसेज़ के चेयरमैन पद्मश्री डॉ. एम.एच. मेहता, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. नरेन्द्र, रीतेन सोनी, भागवत कथाकार वासुदेव शास्त्री एवं डॉ. अनिल बठीजा।

घरौड़ा-हरियाणा। त्रिमूर्ति शिवजयन्ती महोत्सव पर मुख्य अतिथि सोहन लाल गुप्ता,सदस्य हरियाणा कार्यकारिणी कांग्रेस कमेटी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रेम।

भुवनेश्वर। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में हेडमास्टर प्रमिला मिश्रा तथा ब्र.कु.मंजु।

कानपुर। उत्तर प्रदेश खनिकर्म मंत्री को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुमित्रा। साथ हैं ब्र.कु.सुषमा।

शिकोहाबाद। महाशिवरात्रि पर निकाली गई रैली को शिव ध्वज दिखाकर रवाना करते हुए ब्र.कु. श्याम सुंदर,माउण्ट आबू, ब्र.कु.हरि ओम, ब्र.कु.किशोर, थाना अध्यक्ष सुरेश चन्द्र यादव, ब्र.कु.पूनम, ब्र.कु.निधि, ब्र.कु.राजपाल तथा अन्य।